5

## अहो चैतन्य आनन्दमय

अहो चैतन्य आनन्दमय, सहज जीवन हमारा है।
अनादि अनंत पर निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है ।। टेक ।।

हमारे में न कुछ पर का, हमारा भी नहीं पर में।
द्रव्य-दृष्टि हुई सच्ची, आज प्रत्यक्ष निहारा है ।।1 ।।

अनंतो शक्तियाँ उछलें, सहज सुख ज्ञानमय विलसें ।
अहो प्रभुता परम पावन, वीर्य का भी न पारा है ।।2।।

नहीं जन्मू नहीं मरता, नहीं घटता नहीं वढता,
अगुरुलघु रूप ध्रुव ज्ञायक, सहज जीवन हमारा है ।। 3 ।।

सहज ऐश्वर्य मय मुक्ति, अनंतो गुणमयी ऋद्धि ।
विलसती नित्य ही सिद्धि, सहज जीवन हमारा है ।।4।।

किसी से कुछ नहीं लेना, किसी को कुछ नहीं देना ।
अहो निश्चित परमानन्दमय, जीवन हमारा है ।।5।।

अहो! मेरा जीवन अत्यंत सहज और चैतन्य के आनंद स्वरूप वाला है। अनादि है, अनंत है, और पर की सहायता से रहित है और ध्रुव स्वरूपमय है॥टेक॥

हमारी आत्मा में कुछ भी अन्य द्रव्यों का नहीं है और हमारे चैतन्य का अंश मात्र भी अन्य द्रव्यों में नहीं है। हमारी दृष्टि आज चैतन्य को जानने वाली हुई है, यह हमने आज प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन कर लिया है ॥1॥

मेरे चैतन्य स्वरूप में अनंत शक्तियाँ उछल रही हैं और यह सारी शक्तियाँ सहज, सुख, ज्ञानमय प्रतिभासित हो रही हैं। आज ऐसा लग रहा है कि मेरे चैतन्य की प्रभुता अत्यंत पवित्र है और मेरे उत्साह व पुरुषार्थ का भी आज पारावार नहीं है ॥2॥

मेरा कभी जन्म नहीं होता और न ही मैं कभी मरता हूँ। मैं कभी घटता नहीं ना ही बढ़ता हूँ, मैं ज्ञायक स्वभाव वाला हूँ, यही हमारा सहज जीवन है ॥3॥

मुझे प्रभुता संपन्न मुक्ति प्राप्त हो गई है और अनंत गुणमय ऋद्धियाँ प्राप्त हो गई हैं। ऐसा अनुभव हो रहा है कि मानो चैतन्य की सिद्धि हर पल शोभायमान हो रही है– यही हमारा सहज जीवन है ॥4॥

मुझे पर द्रव्यों से कुछ नहीं चाहिए और न ही किसी अन्य को मुझे कुछ देना है। हमारा जीवन अत्यंत निश्चित और परम आनंदमय और सहज है ॥5॥